SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

“अभिक्षमता परीक्षण व शिक्षा में इसकी उपयोगिता”

त्रिपुरारी दूबे
पी–एच0 डी0, शोध छात्र
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कालेज, गोण्डा
सम्बद्ध– डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या, उ0प्र0

सारॉंश

विभिन्न प्रकार के प्राणियों में तथा किसी एक ही प्रजाति के प्राणियों में भी समान ढ़ंग की व्यैक्तिक भिन्नताएँ पायीं जाती हैं। विभिन्नताओं के कारण ही प्रकृति में आकर्षण तथा सौन्दर्य होती हैं। जैसा हम जानते हैं कि व्यक्ति के अन्दर जन्म से ही कुछ विशेष योग्यताएँ एवं किसी कार्य में विशेष प्रतिभाएँ होती हैं जो उसको विकसित होने एवं किसी कार्य में उसे सफल बनाने में योगदान देती हैं। व्यक्ति का यह जन्मजात कौशल (Skill) ही अभिक्षमता कहलाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यक्ति की जन्मजात योग्यताएँ उसकी अभिक्षमता होती हैं। व्यक्ति भविष्य में किन क्षेत्रों में सफल होगा, उसका अनुमान व्यक्ति की अभिक्षमता का मापन करके की जा सकती है।

शिक्षा के क्षेत्र में अभिक्षमता परीक्षण का विशेष महत्व है। चूँकि मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि व्यक्ति भविष्य में क्या बनेगा, यह उसकी बाल्यावस्था में ही पता चल जाता है। ऐसा इसलिए कि बालक अपने मूल गुणों के पुनरावृत्ति अपने कार्य व व्यवहार में करने लगता है। शिक्षा के क्षेत्र में इस परीक्षण की उपयोगिता इसलिए असंदिग्ध है, कि शिक्षा से सम्बन्धित समस्त संसाधन बालक की विशिष्ट योग्यताओं की पहचान व मापन करके उसके उत्थान के लिए विशेष प्रयत्न कर सकते हैं। अभिक्षमता परीक्षण का मतलब किसी व्यक्ति के कौशलों के अर्जन के लिए अन्तर्निहित सम्भाविता से है। अभिक्षमता परीक्षण का उपयोग यह पूर्व कथन करने में किया जाता है, कि व्यक्ति उपयुक्त पर्यावरण और प्रशिक्षण प्रदान करने पर कैसा निष्पादन कर सकेगा। प्रस्तुत शोध पत्र में विभिन्न प्रकार के अभिक्षमता–परीक्षण व शिक्षा में उसके निहितार्थ पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य शब्दः शिक्षा, अभिक्षमता परीक्षण, बाल्यावस्था आदि ।

प्रस्तावना

अभिक्षमता को एक ऐसी प्रतिभा, योग्यता या क्षमता के रूप में जाना जाता है जो जन्मजात होती है। परन्तु यह छात्रों व व्यक्तियों के व्यवहार व कार्यों में समय–समय पर दृष्टिगोचर होती रहती है। इस प्रकार अभिक्षमता एक महत्वपूर्ण पद है, जिसका अर्थ किसी खास विषय या क्षेत्र में ज्ञान, अभिरूचि, कौशलता आदि विकसित करने की क्षमता से होता है। दूसरे शब्दों में अभिक्षमता किसी विषय या क्षेत्र में ज्ञान हासिल करने या सीखने की अन्तःशक्ति (Potential) है। किसी छात्र या व्यक्ति की अभिक्षमता को जानकर शिक्षण या प्रशिक्षणकर्ता/अनुसंधानकर्ता आसानी से उसके भविष्य के निष्पादनों के बारे में पूर्वानुमान (Predication) लगा सकता है। अतः हम कह सकते हैं कि अभिक्षमता किसी क्षेत्र विशेष में व्यक्ति की कार्य कुशलता की विशिष्ट योग्यता (Specific Ability) तथा विशिष्ट क्षमता (Specific Potential) को इंगित करती है।

फ्रीमैन (1962) के अनुसार – "उन गुणों के संयोग जिनसे कुछ विशिष्ट ज्ञान एवं संगठित अनुक्रियाओं के सेट की कौशलता, जैसे कोई भाषा बोलना, गायन करना, यान्त्रिक कार्य करना, आदि को सीखने की क्षमता का पता चलता है, अभिक्षमता कहा जाता है।"

टुक मैन (1975) के अनुसार – "क्षमताओं एवं अन्य गुणों चाहे जन्मजात हों या अर्जित हों का एक ऐसा संयोग, जिससे व्यक्ति में सीखने की क्षमता या किसी खास क्षेत्र में निपुणता विकसित करने की क्षमता का पता चलता है, अभिक्षमता कहलाता है।"

विंघम के अनुसार – "किसी विशिष्ट परीक्षण के उपरान्त दिये गये क्षेत्र में कुछ ज्ञान या कौशल या प्रतिक्रियाओं का समुच्चय को अर्जित करने की किसी व्यक्ति की योग्यता को लाक्षणिक रूप से व्यक्त करने वाली विशेषता अथवा दशाओं का समुच्चय अभिक्षमता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हुआ कि अभिक्षमता व्यक्ति द्वारा विशिष्ट क्षेत्र में कोई गुण या कौशल सीखने की अन्तः शक्ति होती है। शिक्षकों को छात्रों की अभिक्षमता का ज्ञान होने से उन्हें निर्देश देने में तथा भविष्य में उनके निष्पादन (Performance) के बारे में पूर्वानुमान लगाने में काफी सहूलियत होती है।

अभिक्षमता का मापन–

अभिक्षमता का मापन मानक परीक्षणों अर्थात् अभिक्षमता परीक्षणों द्वारा किया जाता है।

फ्रीमैन के अनुसार – "अभिक्षमता परीक्षण वह है, जिसकी रचना किसी विशेष प्रकार की तथा किसी सीमित क्षेत्र की क्रिया करने की बीजभूत योग्यता को मापने के लिए की जाती है।

मनौवैज्ञानिकों एवं शिक्षाशास्त्रियों द्वारा अभिक्षमता परीक्षणों को उनकी प्रकृति के अनुसार प्रमुख रूप से दो वर्गों में विभाजित किया गया है–

अ. बहुअभिक्षमता परीक्षण माला–

1– विभेदी अभिक्षमता परीक्षण।

2– सामान्य अभिक्षमता परीक्षण।

3– फ्लैनगन अभिक्षमता वर्गीकरण परीक्षण।

ब. विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण माला–

1– लिपिकीय/शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण।

2– यान्त्रिक अभिक्षमता परीक्षण।

3– संगीतिक अभिक्षमता परीक्षण।

4– चिकित्सीय अभिक्षमता परीक्षण।

5– कलात्मक अभिक्षमता परीक्षण।

6– वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण।

अ. बहुअभिक्षमता परीक्षण माला– इस परीक्षण माला द्वारा एक साथ कई छात्रों में अन्तर्निहित क्षमताओं का मापन होता है। इस प्रकार के अभिक्षमता परीक्षण प्रायः श्रृंखला प्रकार के परीक्षण (Battery Type Tests) होते हैं। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन परीक्षण आते हैं जो निम्न हैं–

1– विभेदी अभिक्षमता परीक्षण– ये परीक्षण व्यक्ति या बालक की विभिन्न अभिक्षमताओं में विभेद को व्यक्त करते हैं। इसलिए इन्हें विभेदी या भेदक अभिक्षमता परीक्षण (Diffrential Aptitude Test) कहा जाता है। इस परीक्षण का प्रयोग मुख्य रूप से व्यक्तियों में नियोजन परीक्षण में किया जाता है। विभेदी अभिक्षमता परीक्षण (DAT) द्वारा आठवीं कक्षा के पुरूष छात्र व महिला छात्राओं की आठ तरह की अभिक्षमताओं का मापन किया जाता है। इसमें लगभग 3 घण्टे का समय लगता है। ये निम्नवत् हैं–

- शाब्दिक चिन्तन। (Verbal Reasoning or VR)
- संख्यात्मक या आंकिक योग्यता। (Numerical Ability or NA)
- अमूर्त तर्क/चिन्तन। (Abstract Reasoning or AR)
- स्थानगत सम्बन्ध। (Space Relations or SR)
- यान्त्रिक चिन्तन। (Mechenical Reasioning or MR)
- लिपिकीय गति व परिशुद्धता। (Clerical Speed & Accuracy or CSA)
- वर्तनी (Spelling or Sp)
- भाषा उपयोग (Language Usager or LU)

अमेरिका की मनोवैज्ञानिक कार्पोरेशन द्वारा प्रकाशित DAT पूरे संसार में लोकप्रिय है। इसी लोकप्रियता के परिणाम स्वरूप DAT का हिन्दी भाषा में अनूकूलन प्रो0 जे0 एस0 ओझा द्वारा किया गया है। जो "मानसायन" दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है।

2– सामान्य अभिक्षमता परीक्षण– सामान्य अभिक्षमता परीक्षण माला (GATB) द्वारा 9 अभिक्षमताओं का मापन 12 परीक्षणों द्वारा होता है। 12 में से 8 परीक्षण पेपर–पेन्सिल परीक्षण तथा बाकी 4 परीक्षण ऐसे हैं, जिनका

क्रियान्वयन करने के लिए उपकरण की आवश्कता पड़ती है। इस परीक्षण माला के क्रियान्वयन में करीब करीब 2:30 घण्टे का समय लगता है। परीक्षण की जाने वाली 9 अभिक्षमताएँ निम्नलिखित हैं–

- बुद्धि। (Intelligance or G)
- शाब्दिक अभिक्षमता। (Verbal Ability or V)
- संख्यात्मक अभिक्षमता (Numerical Ability or N)
- स्थानगत अभिक्षमता (Space Ability or S)
- लिपिक प्रत्यक्षण (Clerical Perception or Q)
- क्रियात्मक समन्वय या पेशीय समन्वय (Motor Co-ordination or K)
- अंगुली दक्षता (Finger Dexterity or F)
- हस्त निपुणता (Manual Dextertiy or M)
- आकार प्रत्यक्षण (Form Perception or P)

इन सभी परीक्षणों पर आये प्राप्तांक का मानक प्राप्तांक (M=100 & S.D.=20) ज्ञात करके सामान्य अभिक्षमता का पता लगाया जाता है। इस परीक्षण का प्रयोग सर्व प्रथम 1962 में सैन्य सेवाओं में किया गया था।

3– फ्लैनगन अभिक्षमता वर्गीकरण परीक्षण– इस परीक्षण का प्रयोग व्यवसायिक परामर्श तथा कर्मचारी चयन में किया जाता है। इसका निर्माण फ्लैनगन द्वारा 21 व्यावसायिक अभिक्षमताओं का मापन करने के लिए बनाया गया था। इनमें से 19 व्यावसायिक अभिक्षमता मापने के लिए शाब्दिक परीक्षण तथा 2 अभिक्षमता मापने के लिए क्रियात्मक परीक्षण विकसित किये गये हैं।

उपर्युक्त तीनों के अतिरिक्त Guilford-Zimmerman Aptitude Survey, Multiple Aptitude Test तथा Academic Promise Test मुख्य हैं।

ब. विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण माला– विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण वह परीक्षण होता है जिसके द्वारा किसी एक ही तरह की अभिक्षमता की माप की जाती है। ऐसे परीक्षण को एक कारक अभिक्षमता परीक्षण (UAT) भी कहा जाता है। ये किन्हीं विशिष्ट क्षेत्र में अभिक्षमता का मापन करने लिए प्रयुक्त किये जाते हैं। विशिष्ट अभिक्षमता से तात्पर्य व्यक्ति में अन्तर्निहित किसी विशेष तरह की अन्तःशक्ति जैसे लिपिकीय, यान्त्रिक, संगीतिक, चिकित्सीय, कलात्मक व वैज्ञानिक अभिक्षमता से है।

1– लिपिकीय/शिक्षण अभिक्षमता परीक्षण– इसके द्वारा व्यक्ति की लिपिकीय अभिक्षमता अर्थात् किसी कार्य को तेजी से शुद्ध शुद्ध करने की क्षमता, हस्त लेखन, क्रियात्मक गति एवं शुद्धता आदि से होता है। मिनीसोटा लिपिकीय परीक्षण, Detroit Clerical Aptitude Test व General Clerical Aptitude Test आदि लिपिकीय अभिक्षमता परीक्षण हैं।

2– यान्त्रिक अभिक्षमता परीक्षण– इस परीक्षण में यान्त्रिक अभिक्षमता के प्रत्येक भाग को मापने के लिए अलग–अलग परीक्षण का निर्माण किया गया है। इसमें यान्त्रिक सज्जीकरण परीक्षण (मिनीसोटा सज्जीकरण

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

परीक्षण), सूचना परीक्षण (ओरोके यान्त्रिक अभिक्षमता परीक्षण), यान्त्रिक तर्कना परीक्षण (विनेट यान्त्रिक बोध परीक्षण), दक्षता परीक्षण (विनेट हैण्डटूल दक्षता परीक्षण) व स्थानिक सम्बन्ध परीक्षण (मिनीसोटा पेपर फार्म बोर्ड परीक्षण) प्रमुख परीक्षण हैं।

3– संगीतिक अभिक्षमता परीक्षण– इस परीक्षण का प्रयोग व्यक्ति की संगीत अभिक्षमता के मापन के लिए किया जाता है। सीशोर संगीत प्रतिभा परीक्षण, विंग संगीत बुद्धि के प्रमापीकृत परीक्षण, Drake Musical Aptitude Test आदि संगीतिक अभिक्षमता परीक्षण है।

4– चिकित्सीय अभिक्षमता परीक्षण– इस परीक्षण का प्रयोग व्यक्तियों के चिकित्सा सम्बन्धित अभिक्षमता के परीक्षण के लिए किया जाता है। चिकित्सा महाविद्यालय प्रवेश परीक्षण एक चिकित्सीय अभिक्षमता परीक्षण है।

5– कलात्मक अभिक्षमता परीक्षण– कलात्मक अभिक्षमता परीक्षण में कला से सम्बन्धित अभिक्षमता के दो पहलुओं का मापन होता है– सौन्दर्य संवेदी निर्णय तथा सौन्दर्य संवेदी उत्पादन। सौन्दर्य संवेदी निर्णय के लिए मायर आर्ट निर्णय परीक्षण व सौन्दर्य संवेदी उत्पादन में हार्न आर्ट अभिक्षमता आविष्कारिका का प्रयोग होता है। मियर कला परीक्षण भी कलात्मक अभिक्षमता परीक्षण है।

6– वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण– Scientific Aptitude Test for College Students (SATC) का निर्माण बिहार में स्व0 ए0 के0 पी0 सिन्हा एवं स्व0 एल0 एन0 के0 सिन्हा द्वारा निर्मित है। कालेज छात्रों के वैज्ञानिक अभिक्षमता मापने के लिए इस परीक्षण में सभी एकांक हिन्दी में हैं। इसका मानकीकरण कालेज के 592 छात्रों पर किया गया है। अधिक श्रेष्ठ अभिक्षमता परीक्षण विदेशी हैं। भारत में अभिक्षमता परीक्षण के क्षेत्र में बहुत कम कार्य हुआ है।

शिक्षा में अभिक्षमता परीक्षण की उपयोगिता– शिक्षा के क्षेत्र में बुद्धि परीक्षण के समान अभिक्षमता परीक्षण की भी उपयोगिता असंदिग्ध है। इसकी कुछ प्रमुख उपयोगिताएँ निम्न हैं–

1– अभिक्षमता परीक्षण द्वारा शिक्षक उत्तम अन्तःशक्ति वाले छात्रों का चयन करके उनके लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम का निर्माण व उचित शिक्षा प्रदान कर सकता है।

2– अभिक्षमता परीक्षण द्वारा छात्रों की शैक्षिक समस्याओं का निदान किया जा सकता है। जैसे– पठन अभिक्षमता परीक्षण।

3– अभिक्षमता परीक्षण का प्रयोग शिक्षकों व स्कूल परामर्श दाताओं द्वारा विशेष क्षेत्रों जैसे इंजीनियरिंग, चिकित्सा, शिक्षा व कला आदि में छात्रों को पुनर्निवेशन (Feedback) प्रदान करने के लिए किया जाता है।

4– अभिक्षमता परीक्षण का उपयोग शिक्षक भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों में छात्रों के निष्पादन के बारे में पूर्वानुमान लगाने में कर सकते हैं।

5– अभिक्षमता परीक्षण द्वारा शिक्षक छात्रों का श्रेणीकरण (Grading) कर उनका नियोजन (Placement) करने में उनकी मदद कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथः–

1. सिंह, अरूण कुमार, (2007) उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली।
2. गुप्ता, एस0 पी0, (2008), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, 11, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।
3. सिंह, अरूण कुमार, (पुनः मुद्रण 2020), शिक्षा मनोविज्ञान, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना।
4. शर्मा, डॉ0 आर0 ए0, शैक्षिक एवं मानसिक मापन, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. भटनागर, सुरेश, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. भटनागर और भटनागर, मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/06

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

त्रिपुरारी दूबे

For publication of research paper title

"अभिक्षमता परीक्षण व शिक्षा में इसकी उपयोगिता"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com